दो बिल्ले

दो बिल्ले

किसी समय की बात कहीं पर
रहते थे दो बिल्ले।
उन्हें न होता काम-काज कुछ
रहते सदा निठल्ले।।

काम न कोई, इसीलिए, वे
बस लड़ते ही जाते।
पूँछों को अकड़ाकर अपनी
झपट झपट कर आते।।

दिन को लड़ते और रात को
वे ऐसे ही भिड़ते।

रोयें उन दोनों के तन के
दूर दूर तक उड़ते ड्ड

तन पर रहा न आख़िर बाल।
हुआ बुरा दोनों का हाल ड्ड